

गुप्तकालीन मर्यादा

ASHA ARCHIVES

3519

१५२ जो मारी पूजा

१ वसुदेवस्य ध्यानं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वसुदेवस्य ध्यानं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वसुदेवस्य ध्यानं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

धाविनी ॥ नक वसुधनी धानं नक मोसावमानं ॥ याम्यधीभस्मिनां
 निष्ठां विश्वत्रया विचिन्तय ॥ वलि ॥ ॐ कीं कुं कीं कुं वलुनेव वासनाय
 अस्मद्वक्त्या गिनीसहिगायक मानवगी कालि २ अंवायायू कुं कुं नमः वलि
 गृह्णतस्वाहा ॥ वंजया प्रीतिं कुं कुं यथाकमानि कुं कुं वलि गृह्णत
 स्वाहा ॥

नमः मन्त्र स च नन्दनानि ध्याय (१००० ध्याय ॥ २
 ॐ श्री गुरुगणेशाय नमः ॥ ॐ श्री कोमाय नमः ॥ ॐ श्री सर्व
 साम श्री सङ्कीर्तय ॥ जलान्मधनं ॥ ॐ गन्धदक कूँडं स्वाहा ॥ ३ ॥
 ॥ गुणधर्मनं ॥ ॐ क्रीं आत्मगतवाय स्वाहा ॥ ॐ क्रीं विशातत्वाय स्वा
 हा ॥ ॐ क्रीं निवगतवाय स्वाहा ॥ ॥ स्वामं मूर्ध्नि स्थापनं ॥ हृषीकेश
 नाम सुमनुष्यप्राद ॥ ॥ त्रिभुवुरुच्यगवप्रतिष्ठसूक्तनं ॥ ॐ क्रीं आ

ध्यानकादित्यानमः ॥ जमुनाप्रियादिकाप्रकाशप्रदायकः ॥ मू
 लनमस्तुत्याय ॥ वानिनादिसमुल्लस्यते ॥ चन्दनाक
 पृष्णप्रलवमस्तुलनिधाय ॥ अकलमृदयागीर्थावाहनं ॥ ॐ
 कागङ्गाप्रवयमूनवेव रमा अवनीस्तनवनी ॥ नमदिसिन्धुकाव
 त्रिजलसन्निधाएव ॥ वसिष्ठमस्तुलधनमृदयामृतीकृत्य ॥ मूलं

॥ इह साधुभासा ॥ त्रैलोक्य विदुः पापनिमग्नारण्यविह्वला ॥

सादगधाराधयत् ॥ ॥ षडङ्गनायूजनं ॥ चन्दनाक्षगङ्गावि
ल्लयग्रहिन्दुवन्निधाय ॥ ताडग्रयदिगन्धने ॥ तगः जलनक्षत्रया
कनं ॥ ॥ तगोद्यात्रमूजा ॥ ॐ धायनमः ॥ ॐ विधायनमः ॥ ॐ का
ग्रयालायनमः ॥ ॐ वावदूकनाथायनमः ॥ ॐ ग्लो गलयनयनमः ॥
ॐ दौद्यात्रविधेयनमः ॥ ॐ दहल्येनमः ॥ ॐ वावामुपूनवायनमः ॥

॥ तगोह्वासनस्थापनं ॥ ॥ सोमजमुलसंप्रादयिकावृहलित्वायू
जनं ॥ ॐ दौआधानगक्षादिस्थानमः ॥ आसनहस्तायां स्पृणत् ॥
ॐ मन्त्रपुष्टसृष्टिः सृष्टयश्चन्दः कूर्मादवगाज्जसनविनिर्वागः ॥
वक्षज्जनानमः ॥ ॐ पृथीत्वयाधृगालाकादवीत्वं त्विष्मन्नाधृगा ॥
त्वश्चक्षानयमानन्दविषविशङ्कनूवासनं ॥ ॥ नस्थापनिष्ठिका

लवृहलिषित्वाधूजनं॥ॐ श्रीं आधाननाकि कमलासनायनमः॥
 ॥ तताविशारणाधययथा॥ मूलनपाक॥ अरिमसुयन॥ ॐ
 वाधूरमेस्वाहा॥ नं कपि यायेस्वाहा॥ श्रीं वेण्यायेस्वाहा॥ श्रीं मू
 दायेस्वाहा॥ ॐ अमृतजमृता रुच अमृतगुनी अमृतमा कष
 यरसिद्धिंद हि अमृकमवगमानयस्वाहा॥ मूलनसं पृथा जय

॥ अवाहनादिधनयानि मूढाताडयद्यदि गन्धर्व ॥ विजः
 यो धृत्वा गुप्तं लभ्यन्ति त्वा वा मरुत्तं न राक्षस्यथा ॥ ॐ वरु
 वाय्वादिनी मम जिह्वा गच्छित्री तव सर्वदेव कुत्री त्वाह ॥ वि
 ना वस्य ॥ ॥ गता हता यस्तान् ॥ ॐ अयमर्थं नु यत्तु ता यत्तु
 ता ह विमं हिता ॥ यत्तु ता विष्णु कर्तु न नमः ॥ नु निवा रु

ॐ निमलुषयुधियादि सह स्वाधिस्यानघट्टवक्रादितदनग
दन्तुजललीनं विराय ॥ गजलमहमलियूनसमानीयतदं
वक्रोजललीनं विराय ॥ गस्माद्विनासहानाहमसमानीयवक्ति
वायलीनं ॥ गस्माद्विनासहविशुद्धज्ज्वालीनं ॥ गस्मादाका
नसहानाचक्रमनस्याकाजलीनं ॥ मनामादलीनं ॥ नादध्वनि

लीनं ॥ गस्मासहप्रदलकमलडीवात्माधनेमात्मानिवनकिन्नक
त्रयं विरायमानस्ययानदायुजनं विराय ॥ याययूषसाध्या
नं ॥ ॐ वामकृदिस्तिगंयायंयूनंयूयिज्ञलं ॥ वक्रहत्यानि
नस्तुअस्वर्गुस्तुअनुजदयं ॥ सनायागददायकगुनगल्पकटि
दयं ॥ गस्मंस्मर्गपदददंमज्जप्रत्यज्ञयागकं ॥ उययागकवासा

नं न कृष्ण प्रवृत्ति लावनं ॥ स्व न चर्म धनं ॥ कृष्ण मव कृष्णो विनि
 गयत् ॥ अथ प्राप्ता यामः ॥ यमिति वद्वि वीजन कृष्ण वलुधा
 त्वाया उगवानं ऊयत्त याययत्त यस्त हननीनं ॥ यमि
 ति वीजन न कृष्ण वलुधा त्वाय मीवानं ऊयत्त गनीनं सन्देय ॥ व
 मिति वीजन यमीवानं ऊयत्त सवद्वि यूलु मित्वा य ॥ हमिति

नवी ३

वीजानदादिगऊयनसनीननिर्मनदरीहृताम्विरावा ॥ साहमि
 निमनुतककुलनीलोलीहृतांयअहृतानिजीवासावन्नपथह
 स्वस्याननित्याजुयत ॥ गतादवीनूयमात्मानं ध्याप्राणप्रणिष्ठा
 कानयम् ॥ ३ ॥ ओं सां ह्रीं श्रीं कोमा नी द व्याः सर्वन्दि या विष्णुं ह
 गत्यसुखेष्टि न निष्ठु सुखादा ॥ ३ ॥ वन्दतो कृगनकनरभाध

[illegible]

ममचतुर्वर्गसिद्धयविनियोगः॥ वक्षोऽलिः॥ ॥ ध्यानं॥ ॐ
 सिद्धनकाभि ममिगारुनवं नुनयां विशाकसू प्रमृगयागवना
 दधानां॥ पार्श्वस्थितां रगवतिमपिकाधुः नाराधायत्क नाकुधु
 गयसूकवर्धुमालां॥ ॐ अंकं अज्ज् अहु ध्यातां नमः॥ ॐ व
 अली गज्जनीलां ह्वाला॥ ॐ उटं अहु मध्य मायां देवट्॥ ॐ ज्ज् अ

[illegible][illegible]

आं व ह स्तं व ऊं विंशात्तानि न द प्र सं वि न य नीं वा र ग्द व ता मा वि
थ ॥ ॐ नि ध्या त्वा न्य स त् ॥ ॐ ज न मः ॥ ल ना ट ॥ ॐ ज न मः ॥ मः
स्व वृ ल ॥ ॐ न मः ॥ द क न य ॥ ॐ नि मः ॥ वा म न य ॥ ॐ उ न
मः ॥ द क क र्त्तु ॥ ॐ उ न मः ॥ वा म क र्त्तु ॥ ॐ म न मः ॥ द क ना
सा या ॥ ॐ म न मः ॥ वा म ना सा या ॥ ॐ उ न मः ॥ द क ग र्त्तु ॥ ॐ

२ अ २

ॐ न मः ॥ वा म ग र्त्तु ॥ ॐ उ न मः ॥ उ र्द्धा ष्ट ॥ ॐ उ र्द्धा ष्ट ॥ ॐ उ
न मः ॥ उ र्द्धा ष्ट ॥ ॐ उ न मः ॥ अ ध द न्द ॥ ॐ न मः ॥ गि ल सि ॥ ॐ
अ न मः ॥ मू र्द्धा ॥ ॐ क न मः ॥ द क वा द्दः ॥ ॐ उ न मः ॥ द क
क र्त्तु ॥ ॐ ग न मः ॥ द क म लि व र्त्तु ॥ ॐ उ न मः ॥ द क क र्त्तु लि मू
ल ॥ ॐ उ न मः ॥ द क क र्त्तु लि मू ॥ ॐ उ न मः ॥ वा म वा द्दः ॥

ॐ नमः॥ वामकर्णाय॥ ॐ नमः॥ वाममसिवंश॥ ॐ नमः॥
॥ वामकर्णगुलिमूल॥ ॐ नमः॥ वामाङ्गुल्यङ्गु॥ ॐ
नमः॥ दक्षकटि॥ ॐ नमः॥ दक्षजानूः॥ ॐ नमः॥ दक्ष
गुल्फ॥ ॐ नमः॥ दक्षपादाङ्गुलिमूल॥ ॐ नमः॥ दक्षपा
दाङ्गुलिमूल॥ ॐ नमः॥ वामकर्ण॥ ॐ नमः॥ वाम

जानूः॥ ॐ नमः॥ वामगुल्फ॥ ॐ नमः॥ वामपादाङ्गुलिमू
ल॥ ॐ नमः॥ वामपादाङ्गुल्यङ्गु॥ ॐ नमः॥ दक्षपार्श्व
॥ ॐ नमः॥ वामपार्श्व॥ ॐ नमः॥ दक्षपार्श्व॥ ॐ नमः॥
नासिः॥ ॐ नमः॥ उदर॥ ॐ नमः॥ हृदिः॥ ॐ नमः॥
दक्षार्ण॥ ॐ नमः॥ कक्षदि॥ ॐ नमः॥ वामार्ण॥ ॐ नमः॥

मः॥ हृदयाद्दृक्कनांगुलियर्थं॥ ॐ धनमः॥ हृदयादाम
कनांगुल्यर्थं॥ ॐ संनमः॥ हृदयात्पादाङ्गं॥ ॐ हनमः॥ हृदः
यात्कामयादाङ्गं॥ ॐ लनमः॥ हृदयानाङ्गं॥ ॐ कनमः॥ हृ
दयात्सखाङ्गं॥ ॥ न्यासस्तु॥ मातृकान्यासधारगणसर्वपाप
प्रक्षान्तं॥ यदुर्वदयस्त्वयंगत्स्वमातृकान्यस्तु॥ ॐ नि॥

अथ श्रीन्यासः॥ ॐ कामरूपी भयनमः॥ निलस्तु॥ ॐ ॐ
वानानसीपी भयनमः॥ मूर्ख॥ ॐ ॐ नयानेपी भयनमः॥
ॐ ॐ लुवङ्गनपी भयनमः॥ ॐ ॐ वामनयु॥ ॐ ॐ पञ्चस्थि
पी भयनमः॥ दृक्कलु॥ ॐ ॐ कान्यकृदिपी भयनमः॥ वाम
कलु॥ ॐ ॐ मूर्खुरनेलपी भयनमः॥ दृक्कनाहाया॥ ॐ ॐ

ॐ अर्चयिष्ये नमः ॥ वामनामिकायां ॥ ॐ ॐ आभानकम्बनी
यी नमः ॥ दक्षगं ॥ ॐ ॐ उकाभकयी नमः ॥ वामगं ॥
ॐ ॐ गिरिप्राययी नमः ॥ दुर्वा ॥ ॐ ॐ कामकाटयी नमः ॥
अरुधा ॥ ॐ ॐ केलायी नमः ॥ दुर्दन्तयको ॥ ॐ ॐ
हनुयी नमः ॥ अरुदन्तयको ॥ ॐ ॐ कदानयी नमः ॥ कि

हारय ॥ ॐ ॐ अः चन्द्रयुनयी नमः ॥ मूर्द्धि ॥ ॐ ॐ कंलीयी न
यनमः ॥ दक्षवाहः ॥ ॐ ॐ उंकानयी नमः ॥ कर्पय ॥ ॐ ॐ गं
जालाचनयी नमः ॥ मलिवरध ॥ ॐ ॐ धंभानवनीयी नमः
नः ॥ अंगुलिमूल ॥ ॐ ॐ कंकलानकयी नमः ॥ अङ्गुल्यय ॥
ॐ ॐ चंदवीकाटयी नमः ॥ वामवाहः ॥ ॐ ॐ रंगकलुयी नमः

नमः ॥ कूर्यन् ॥ ॐ ॐ मानूत स्वययी लयनमः ॥ मतिवंध ॥
ॐ ॐ अहं हास्ययी लयनमः ॥ अंगुलिमूल ॥ ॐ ॐ विनजयी
लयनमः ॥ अंगुल्यग्र ॥ ॐ ॐ अंगुल्यग्रयी लयनमः ॥ दक
कटि ॥ ॐ ॐ महायवयी लयनमः ॥ दकजानू ॥ ॐ ॐ का
नागिनीयी लयनमः ॥ गुल्फ ॥ ॐ ॐ वक्राययी लयनमः ॥

अंगुलिमूल ॥ ॐ ॐ कोल स्वययी लयनमः ॥ अंगुल्यग्र ॥
ॐ ॐ अयनीयी लयनमः ॥ वामकटि ॥ ॐ ॐ अयनीयी ल
यनमः ॥ जानू ॥ ॐ ॐ अयनीयी लयनमः ॥ गुल्फ ॥ ॐ ॐ अयनी
विकायी लयनमः ॥ अंगुलिमूल ॥ ॐ ॐ अयनीयी लयनमः ॥
लयनमः ॥ अंगुल्यग्र ॥ ॐ ॐ अयनीयी लयनमः ॥ दक

पार्ष्णी ॥ ॐ हं प्रयागपीठाय नमः ॥ वामपार्ष्णी ॥ ॐ वं
वृद्धीशपीठाय नमः ॥ अथ न ॥ ॐ हं मायाय नमः ॥
नाहिः ॥ ॐ मं जननीपीठाय नमः ॥ उदुन ॥ ॐ यं मलय
पीठाय नमः ॥ हृदि ॥ ॐ नं श्रीलेखपीठाय नमः ॥ दक्षिण
ॐ लं मन्त्रीपीठाय नमः ॥ वरुणि ॥ ॐ वं गिरिवरपीठाय नमः

॥ वामक्षेत्र ॥ ॐ नं माहन्दीपीठाय नमः ॥ हृदयादकक
नाग्रान् ॥ ॐ वं वामनपीठाय नमः ॥ हृदयादामकनाग्रान् ॥
ॐ संहिनं यन्पीठाय नमः ॥ हृदयादकपादान् ॥ ॐ हं
महालक्ष्मीयन्पीठाय नमः ॥ हृदयादामपादान् ॥ ॐ लं मः
हाथीनपीठाय नमः ॥ हृदयात्तनाग्रान् ॥ ॐ कं कं यादुपी

अनमः॥ हृदयात्सखां॥ भूमिपीठन्यासः॥ ॥ जयद्वितीया
सः॥ जेऊं श्रीं शुं श्रीं कालिं महाकालि मां सः॥ अनित्यं किनी
जो जी जेनक हृदय प्रसीदवी मां यन्मनुने प्रवः श्रीं शुं श्रीं जो जे
हृदयद्वितीया हृदया अनमः॥ जेऊं अनमा हगवती हृदया अलि न
धिन मां सः॥ कालिकया लखदा हृदया विनी हन २६ हृदय वरुमथ

२मानय २यसु २हृदयः श्रीं शुं श्रीं जो जे निवा हृदयानि ल
सखा हा॥ जेऊं जो जी हृदय श्रीं शुं श्रीं जो जे निखा हृदयानि खाये
वध हृदय॥ जेऊं उदालिया आसि मदि या आ सव य हृदय वि सवि हृ
आसि वि आसि उल्लाखि या आ सव हृदय लखि या आ श्रीं शुं श्रीं
जो जे कव व हृदय कव वाय हृदय॥ जेऊं अनक २महानक चामर २

[illegible]

ॐ माधव नन्द विष्णु क्लीवि अष्टौ पादू ॥ इति ॥ ॐ माधव
नन्द विष्णु माहेश्वरी विष्णु अष्टौ पादू ॥ क १८ ॥ ॐ माधव नन्द
विष्णु कोमारी विष्णु अष्टौ पादू ॥ नासू ॥ ॐ माधव नन्द विष्णु वे
श्वरी विष्णु अष्टौ पादू ॥ मूख ॥ ॐ माधव नन्द विष्णु वानादि
विष्णु अष्टौ पादू ॥ नासिका १८ ॥ ॐ माधव नन्द विष्णु ह्युत्तरी

विश्वं प्रीतिं पापं ॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ अनाद्यवयवदविश्वं चामृतं ॥
विश्वं प्रीतिं पापं ॥ ललाटं ॥ ॐ अनाद्यवयवदविश्वं महालक्ष्मीं
विश्वं प्रीतिं पापं ॥ ललाटं ॥ ॐ अनाद्यवयवदविश्वं महालक्ष्मीं ॥ ॐ
ॐ अनाद्यवयवदविश्वं महालक्ष्मीं ॥ ॐ अनाद्यवयवदविश्वं महालक्ष्मीं ॥ ॐ
ॐ अनाद्यवयवदविश्वं महालक्ष्मीं ॥ ॐ अनाद्यवयवदविश्वं महालक्ष्मीं ॥ ॐ
ॐ अनाद्यवयवदविश्वं महालक्ष्मीं ॥ ॐ अनाद्यवयवदविश्वं महालक्ष्मीं ॥ ॐ

यद्वाधिस्यानयापू॥तिंग॥॥ॐ हूं लूं लूं लूं नूं मणिपूरलाकिनी
यमनिपूरचक्रपापू॥नारो॥॥ॐ हूं कूं कूं कूं जूनारुग
काकिनीयमनिपूरचक्रपापू॥ददि॥॥ॐ हूं सूं सूं सूं
सूं विष्टुष्टाकिनीयविष्टुष्टवक्र॥करु॥॥ॐ हूं वूं वूं वूं
वूं अरुहाकिनीयअरुहाचक्रपापू॥ललाट॥ॐ ति॥॥

२ विनायक गायत्री चंदमनमः

अथ मूलमंडपनामः ॥ अष्टमि चंदः ॥ ॐ अस्तु मंडपनामः ॥ मि
लमः ॥ ॐ प्रजापति अष्टमि चंदः ॥ ॥ मरुतः ॥
मः ॥ ॥ ददि ॥ ॐ कोमावीदवगायेनमः ॥ ॥ रुद्रः ॥ ॐ वीजायनमः ॥
॥ यादो ॥ ॐ गोकुलनमः ॥ ॥ सर्वारक्षः ॥ ॐ कीलकायनमः ॥ ॥
वक्षः ॥ ॐ अतिनामः ॥ ॐ चतुर्दशसिद्धयविनियोगः ॥ ॥ अथ

मंडपनामः ॥ कांददयादिकनमः ॥ ॥ मनामूलनया
थकन्यासंकेताक्षीमिगिकापवीजनक्रमात्क्रमनयात्मन्याम
कात्रयम् ॥ ॥ गंगां नमः ॥ मूलाक्षवत्वाधिरथानमविधूना
नाहगविष्णुकाकासहस्रद्वयकमलानां हृत्कान्तप्ररुहतामि
रावामूलाक्षनात्तुलिनीसूत्रनावत्तनासहस्रद्वयकमलस्थ

यत्र निवनसंगमयागयाः सामनस्यं विराव्यधालीकलानिः
हृताम्बुधनयोमृगधनयाकृणुलिनीमन्यधिनः प्रवृक्कस्थद
वतांतांतामृगनहृदिमस्यामृगलाधनकृणुलिनीसंस्थाय
गहृजसाधनिलतांतीमृगनदवीहृदयकमलं ध्यात्वा मानस्य
धानः पूजयदित्युक्तयोगः ॥ दवीनृपं विराव्यधालीकलानिः ॥

ॐ जलनचन्दनं नमः ॥ उवमकतसिन्दूरनकचन्दनधूषं वा
सनं प्रयां जलि ॥ ल्यात्तपूजा ॥ ॥ गतामोहनीस्थायनं ॥ सामा
न्यार्थजलनामुमकुनयाक ॥ वदुसुखान ॥ चन्दनं नद्याग्रलयनं ॥
पाशमध्यागिकाललिखरुनमरधधुलिखर ॥ हृदिमकुनयूजनं
॥ मूलनसंस्थायामिप्रकानयय ॥ ॥ ॐ नोवीनृवद्विबेगनाः ॥

यत्वाह ॥ यं जलि ॥ ॐ जी श्रीं श्रीं श्रीं सर्वजन माहि नमः ॥ व
 लिः ॥ ॐ गि ॥ ॥ गतादयो ह्यश्रमा ॥ प्रकाश ॥ ॥ गताय नुयी
 ० पूजा ॥ ॐ जीं ज्ञानन कृदि लानमः ॥ ॐ कृष्ण सनाथनमः ॥ ॐ
 अतनाथनमः ॥ ॐ वनाहं यनमः ॥ ॐ प्रियेयनमः ॥ ॐ सुखम्व
 यनमः ॥ ॐ नत्तदीयायनमः ॥ ॐ त्वत्तुगेलायनमः ॥ ॐ नत्तदीयाय

नमः ॥ ॐ नन्दनाथानाथनमः ॥ ॐ नानावृक्षमहाथानाथनमः ॥ ॐ सु
 मनवनमः ॥ ॐ नत्तमधुयायनमः ॥ ॐ नत्तसिंहासनाथनमः ॥ ॐ
 धर्मायनमः ॥ ॐ कृष्णनाथनमः ॥ ॐ वेनाग्यायनमः ॥ ॐ नेश्वर्यायनमः ॥
 ॐ अर्धधर्मायनमः ॥ ॐ अर्धकृष्णनाथनमः ॥ ॐ अर्धवेनाग्यायनमः ॥ ॐ अर्ध
 नेश्वर्यायनमः ॥ ॐ अर्धानयीलयनमः ॥ ॐ अर्धलंघनयीलयनमः ॥

ॐ श्रीगुरुभिर्योऽय नमः ॥ ॐ कामरूपीय नमः ॥ ॐ महाप्रसादनाय
नमः ॥ ॐ महामयूनासनाय नमः ॥ ॐ गिरीपूजा ॥ ॥ गतामकुलुदि
॥ ॐ श्री १६ मूलक २२ मूलं स्वाहा ॥ विष्णु ॥ ॥ अथ स्थापुद्धिः ॥ विना
नहिरुपदाकालमालायुष्यविद्विद्विनिधायययदीपं प्रक्षाल्य
॥ ॥ गतापूजाय हारं रत्नधनं ॥ हामान्यार्थजलनप्रोक्त ॥ रत्नधनं ॥

यं १० रत्नधनं ॥ तं १० दाहने ॥ वै १० अमृतीकनलं ॥ अवगुं नं हूं ॥ वै
त्यनूमद्रा ॥ गडप्रयदिग्वचनं ॥ मूलनदलध ॥ ॥ अथ श्रीकलनस्था
पनं ॥ हूं सो सा मान्यार्थजलनसंध्याक ॥ प्रिकालवृहसंतिस्या ॥ पूजनं ॥
ॐ श्रीगुरुभिर्योऽय नमः ॥ गतामकुलसंस्थाया ॥ मूलनवामाहका
कनलप्रययत् ॥ संधूया ॥ वहुः संक्रानः ॥ मर्यादूर्ध्वलिधा ॥ पूजनं ॥ ॐ
हूं हूं नमः ॥ मेत्यमद्रा रत्नधनं ॥ ॐ श्रीगुरुभिर्योऽय नमः ॥

मन्त्रः॥ यावमानं यवमानं तन्मन्त्रं यावमानं ॥ पूजनं ॥
आनिमृडादर्शनं यत् ॥ वृद्धवता ध्यातुं शक्तिः ॥ नमस्तु ॥ ह्रीं न
मः वगमा मृडा ॥ ह्रीं नमः संवृत् ॥ ह्रीं नमः संवृत् ॥ ह्रीं नमः संवृत्
लि ॥ मः नमः आनिमृडा ॥ ॥ यत्नः रत्नधयत् ॥ यत्नवत् ॥ निमत्तु
लप्येकं विधा रत्नधयत् ॥ ॥ ततः यत्नं कृत्वा रत्नधनं ॥ रत्नधनं

दाहनामृतीकनलं ॥ वदः ॥ ॐ पुनर्दिष्टं वगवा र्थं मन्त्रं न
शीमः कृत्वा गिविष्टा ॥ यस्यान्तः प्रविष्टं विक्रमं लब्धं विद्विष्टं नि
वृत्तानि विष्टा ॥ रत्नधयः ॥ ॐ यत्नं कृत्वा मिति ॥ रत्नधयः ॥
ॐ तद्विष्टाः यत्नं कृत्वा सदा यत्नं निवृत्तयः दिविवच कृत्वा ततः ॥ मृ
डा ॥ ॐ गर्ह्यं हि सिनीवाति गर्ह्यं हि सनस्वती ॥ गर्ह्यं हि सनस्वती

दवावाधलांयत्कनञ्जो॥ हूं हूं हूं हूं स्वाहा जमृग जमृगा हव
जमृगं वविली जमृगं अवयस्वाहा॥ मूल८॥ कृतिमन्त्रिधान
॥ अथ सामान्याद्यवच्छेदस्थानं ॥ ॥ गं ऊ लनक्षेत्रसायु
त्तप्रादलं ॥ ॐ हूं रुमायै विद्मह कन्यकायै धीमही ॥ तन्नाश्मनी
प्रवादयात् ॥ ॥ गतः श्रीपादस्थानं ॥ हूं जमृगनायाय ॥ वि

[illegible]

[illegible]

येनमः॥ ॐ मानन्दायेनमः॥ ॐ प्रसायेनमः॥ ॐ सुखेनमः॥ ॐ
 प्रसूनेनमः॥ ॐ नयेनमः॥ ॐ धृतेनमः॥ ॐ नानितेनमः॥ ॐ च
 दिकायेनमः॥ ॐ कालेनमः॥ ॐ शास्त्रायेनमः॥ ॐ शिष्येनमः॥
 ॐ प्राप्तेनमः॥ ॐ ज्ञेयदायेनमः॥ ॐ प्रभुमृतायेनमः॥ ॐ
 साममधुलायेनमः॥ ॐ मृतादिधातुनमः॥ ॐ कलाव्याप्तनमः॥ ॐ र्ध्यावाप्तनमः॥

येनमः॥ॐ प्रसवस्य धंवा नत्क नौत्यो नमः॥॥ मूलनवा माहका
कन लवा मृग मूद या पा प्रिका लषट्का लट्ट हं सं लिष्य मरधाः
वागु निधाय ॥॥ पूजन ननु कौ ल ॥ मूल ल प्रियां गतिः ॥॥ य
कार लषट्क ॥ अरुण मूद लगी थ वाहनं ॥ॐ क्रौं गं र ग य ज म
नति ॥॥ य अर नत् पूजन अ ॥ॐ गूं ग ग नत् ल्यानमः ॥ॐ लू ल

नमस्तुभ्यं नमः ॥ हूं यवन नमस्तुभ्यं नमः ॥ हूं मर्त्य नमस्तुभ्यं नमः ॥
नाग नमस्तुभ्यं नमः ॥ ॐ नमो ॥ आनन्दे नवाश्रयवधट् मूर्ति ॥ आनन्द
रे नमो नमः ॥ ॥ गता ॥ मत्स्य मूढया रणाय ॥ अथ
॥ जे अखर लोक हल ॥ नन्दः कनकन सुखाम ॥ नि ॥ हृद
न्द हृद नमस्तुभ्यं निरधक कल नृपिणी ॥ कीं अकृष्टा मृता काना तु

इहान कनकन ॥ अमृतं निरधक स्मिन् वन्दु निहि ननृपिणी ॥ ॐ
गङ्गा यल कनकन वन्दु कलास्य गङ्गा नृपिणी ॥ हृता यनो मृता काना म
यि विस्तर ननृपिणी ॥ ॐ ॥ अखर तुलना ॥ वन्दन मूढा ॥ सः यानि
गं सव मूढा ॥ गङ्गा यदि मन्धनं ॥ नि पाद स्थायनं ॥ अथ गुनः
या प्रभागा या निरधक स्थायनं ॥ मधुपर्क रणाय अथ अथ ॥ ॐ

१५२
३ कोमाजित्तम बरुवा लापनाम

१५२

3519

ASNA ARCHIVES

मानार्थं जलनया क॥ चंदनाकृतं यथा निक्षय नमः सकुल॥ रत्न
 धनं॥ यं रत्नं रत्नं रत्नं॥ वं रत्नं रत्नं॥ गा उग्र यदियं रत्नं॥
 गता गुणपाया मृगन स्वगिन सुगुणं रत्नं॥ ॐ हरे श्री नमः गुणः
 लक्षणं नन्दनाथं रत्नं रत्नं रत्नं॥ दद्यात्वा श्री पादं रत्नं रत्नं
 नमः॥ ज्वं यना यने॥ यनमादि॥ दिव्यो य॥ मानवो य॥ ॥ रत्न
 रत्नं

यागामृतं न॥ ॐ वां वद कनाथं रत्नं रत्नं रत्नं॥ कौक्यं यत्नं रत्नं
 यामि॥ ज्वं यामिनि॥ यामि॥ गत्यमि॥ ॐ वज्रं रत्नं रत्नं
 विज्रं श्री कोमादयाः सां गं सा यक्षं सवाहनां रत्नं रत्नं
 उं उं श्री वज्रं रत्नं रत्नं रत्नं॥ ॐ श्री पादं रत्नं रत्नं
 गामृतं नमः रत्नं रत्नं॥ गता गामृतं रत्नं रत्नं॥ यत्नं रत्नं

[illegible][illegible]

विन्दुवकानयित्वाहिकानंरुय्यात्समन्तायथा॥ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः
सदानिबन्धनविशालात्मनः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥
हंमाध्यामिह्वाहा॥ अथ॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥
ननुद्विधावागयन्तुधात्मनः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥
दहंमाध्यामिह्वाहा॥ दन्तः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥

ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥
सगंधकागवायुतः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥
त्वनयनदहंमाध्यामिह्वाहा॥ बोधः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥
दानिबन्धनविशालात्मनः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥
नागयन्तुधात्मनः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ॥ श्रीगणेशाय नमः॥

कदाचिदादयायुषस्यनृपुनगंधकागवायुतजःन
वीनरुम्यात्मनजुडकंडुवैकीर्णोऽंजुडुसर्वतुलनननृ
याजिवंलभयामिस्वाहा॥मरध॥आडकडर॥ॐआडकडरमि
आगिनमस्मिन्निहिलनिवकाहमस्मिमहमवहिमांशहामिस्वा
हा॥॥मूलाधवात्कुरुतेनीशिवायर्थनं ध्यात्वामृगंशुद्रयादि

मिगत्वमनुष्टुः॥॥तताप्रीयाप्राप्तमनमूर्खविन्दुप्रयदत्वात्
मधामूलमकुलव्यायकन्यासंकानयत्॥॥ततावल्यादिमेषु
लेख्येयथ॥ॐवैकीर्णोऽंजुडुसर्वतुलननमः॥ॐवावैकीर्णोऽंजुडु
सर्वतुलननमः॥ॐकोकप्रयासायनमः॥ॐयायागिनीयानमः॥ॐवा
वामूलमकुलव्यायकन्यासंकानयत्॥॥ततावल्यादिमेषु
लेख्येयथ॥ॐवैकीर्णोऽंजुडुसर्वतुलननमः॥ॐवावैकीर्णोऽंजुडु

[illegible]

वाधा मालं बानलं वासलिलं वनं वायुं कुरु स्थिता वा ॥ कुरु यथी ॥
 यवीषादि ध्वजं पदाधू पदीयादि कन्यागाद व्याः सुदानः पुनः
 वलिविधिना या रुवीनं प्रवन्ताः ॥ यां सर्वया गिनी र्णावलिंगं कुरु
 कुरु स्वाहा ॥ प्रभवतिः ॥ ॐ नमः श्री सिद्धि वापुः पुनः यवलि कुरु
 कुरु स्वाहा ॥ प्रभवतिः ॥ ॐ नमः श्री गीर्गः ॥ ॐ गीर्गः ॥ ॐ गीर्गः ॥

वनवनदसर्वजनं वलमानयवलिं गृह्णात् ॥ २ ॥ स्वाहा ॥ प्रभवलिः ॥ अ
वाहनादि ॥ गऊनी ॥ ६३ ॥ धानि ॥ काय ॥ गऊ मूत्रा ॥ ७ ॥ निववलि ॥
॥ अथ मूलषडङ्गन्यासं हत्वा ध्याय यथा ॥ ७ ॥ वधूकान्तरं संका
नूतं संकाशं तत्तिकादि समप्रण ॥ सूर्याविम्वनिगन्धविमीषद्वय
हसिमानना ॥ वानरूपी महाभायाकोपानीयुप्ररूपिणी ॥ शुक्रां वदुः

कुजां काशं पूजुर्लिंगकिं सुप्रकं ॥ यद्यनागमलिमो लि मूकालं का
नरूपिणां ॥ लिखिता अस्मान्तरं विद्यान्तं नानिकाविली ॥ सोराः
असंयदालम्बी मायः दूयं यनः प्रियं ॥ सर्वकामध्वनीन्दवीं सर्वव्या
पिमहध्वनी ॥ आगस्त्यं स्थिता वक्रप्रैला मूहिकाविली ॥ ध्याय द
वीं सदानो मि कोपानीयुप्रमङ्गला ॥ ७ ॥ निध्याहा हृदयकमलस्थितां

दवीं बहना सायन नकनस्थ यध्यव क्रयथ मा र्जन निर्यानां स्वांः
उलि स्थितां कृ सु म मा भा या म रुं मा था ॥ ॐ महा य द्य व नां त स्थ क
न ला रु त वि ग्र ह ॥ सर्व रु ता हि त मा ग न क हि य न म न्द वी ॥ ग
सू धां प्रे मि भा य वि नि क्ष य ॥ ॐ दे व नि रु कि सु न रु ध वि वा न प्र म
न्वि त ॥ या व ह्वां यू ज मि धा मि ता व ह्वां सु सि ता ह वा ॥ ध्या न यूः

ध्यान मः ॥ ॥ अ वा रु त मू द्वां प्र द न्ध ॥ ॥ प्रा ण प्र मि ष्ठा ॥ ॐ ॐ
सा हं प्री म हा को मा नी द व्याः सर्व दि या नि षू हा ग त्थ ह्वां वि न
नि षू नु ह्वा हा ॥ ॥ द व्या र्ज म उ न्न न्वा स ग ॥ मूल न य या उ र ति
द ला स्वा ग न प्र न्द क् य ति ॥ ॐ रु ग व नि प्री म हा को मा नि स्वा ग न
कृ न लं मि द मा ह न मा म्भ तां ॥ व र्ध नू सः आ नि मू द्वा ॥ ॥ ग मा य वा

नंदशास्त्र ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ दमासनं नमः ॥ एवं याद्यमर्थमाचमन
 मधूपकं माचमनं स्नानं वस्त्राणां गन्धचन्दनानां लेपनं ॥ कङ्कल
 सिन्दूरनाकमनकं चन्दनपूजा ॥ यथाव्याजं नवाभक्तं कृष्णपदीष
 निवेद्य बहुविधं पुष्पागवः रुलादिः पक्षिणः धानितः मिश्र
 विधः मीनागवः मूत्राग्निः मांसागवः सूयागुजः रुलादिः दधि

[illegible]

लीयायू ॥ ॐ कं माहृत्प्रीयायू ॥ ॐ वं कोमारीयायू ॥ ॐ टं वेष्म्वी
यायू ॥ ॐ गं वानाहीयायू ॥ ॐ णं खालीयायू ॥ ॐ यं वामुखीयायू
॥ ॐ लं महालक्ष्मीयायू ॥ वलिमूद्रा ॥ ॥ नमो भूतदेव्युजने ॥ ॐ
वां वामायायू ॥ ॐ अं अक्षयायू ॥ ॐ नां नोदीयायू ॥ ॐ कां कालिया
यू ॥ ॐ कं कनकनयन्यायायू ॥ ॐ वं वनविकनयन्यायायू ॥ ॐ वं वः

नमः
नप्रमथनियायू ॥ ॐ सर्वहृत्तदमनीयायू ॥ वलिमूद्रा ॥ ॥ नमो
बृहस्पते ॥ ॐ नं अग्निमल्ललाययायू ॥ ॐ हं हृद्यमल्ललाययायू
॥ ॐ सं सोममल्ललाययायू ॥ वलिमूद्रा ॥ ॥ नमो बृहन्नयुजने ॥ ॐ
कां कां प्रयात्नयनमः ॥ ॐ वां वदकनाथयनमः ॥ ॐ गं गलयनय
नमः ॥ ॐ यां सर्वयागिनीयनमः ॥ वलिमूद्रा ॥ ॥ नमो दलदिग

[illegible]

मनं ॥ ॐ ॥ श्रीं ॥ आ ध्या न ग क्ख्वा दि स्थान मः ॥ ॐ ॥ सु क ना तु ना य न मः ॥ ध्या
नां ॥ ॐ ॥ आ ड स्थ नी ल व र्णु गु ज द न क य गं क लु लं न त य कं द म्हा नि धा
नि आ गं क न धृ ग वि दि गं लू ल म धृ क द क ॥ मा ला म लु आ दि य कं ल गि
क न द धृ गं वा म र व द्वां ग द लुं धा लं ग किं व ध्या य छि न य न म हि गं ले न वं व
लु क र वं ॥ ध्या न म् ध्या न मः ॥ आ वा रु ना य य वा न धृ य दी य नै व य ॥

कमालिका । तथा चामृतं त्वत्पुंरुद्रं गन्धमवव । नागं धनं तथा घृष्टं
कपालं च कमलं सहस्रं स्युः संकाशं कालाहि नं नृपयै । नृप
नृपसुनादवं नृत्वं गीतं न संयुगं । ऐनवं नृत्वं च सचलिकानलम्
हिमं । अवंध्यात्वा महादवनाटकार्यं हि दुय । मानवानि हि ताथ
यसं च इति नाना नं । ध्यानं ध्यानं मः । । आवाहनादि । प्रयां उलि

: ॐ अं हूं धूं नृत्तं नमः शान्ते वायु मूं नृत्तं लब्धं न किं सहितं
 यथा धूं ॥ वलि मूल आनि मूडा ॥ ॐ ॥ यनि चान धूं जनं ॥ ॐ हूं
 नन्दिनया धूं ॥ ॐ हूं महा कालाय धूं ॥ यथा धूं वलि मूडा नि ॥
 गतः सिद्धि लब्धं धूं जनं ॥ न्यासा सनं ॥ ॐ हूं सिद्धं नमः शान्ते वायु मूं
 सनाय नमः ॥ ध्यानं ॥ ॐ नृडा स्यात् न विषकु पंचक अनां मूला हि मूं ॐ हूं

दिमर्चतीर्थस्थानमः॥ वलिमूद्रा॥॥ सगुणयूजनं॥ ॐ अष्टस्थ
माश्रमविनजीवीस्थानमः॥ ॐ सुवन्दनमस्तनमः॥॥ क्लृप्तं सिं
धुमं॥॥ गंगावान्नीयूजनं॥ वाङ्मयद्यादिन्यासः॥ असन॥ ॐ न
कासनायनमः॥ ध्यानं॥ ॐ लाक्षणसुनिहादवीपधननासम
यरा॥ सर्वत्रविचित्रांगीश्वरकारुणाविग्रहा॥ अष्टदशयुजा

दवीष्टलाक्ष नान्यविधग ॥ स्वप्रयाणं कृत्वा स कथा लंकलि
गंधज ॥ नेधंगं च तथा च लानवम कुरुवन पुदं ॥ रुद्रकंधनः पा
नं च स्वदागं सक मलुलं ॥ मूलं मूत्रं न वेत्ति ॥ गला हिवा रु न
कन ॥ मलुलं वक्षु शित्वा पुनर्दात्ता विप्रयिता ॥ गुमान्निपातकाः
सर्वविमृता मृगका रुवा ॥ ध्यानं दूष्यं ॥ आवाहनादि ॥ प्रयां ऊ

[illegible]

नगाङ्गल गंदूकंदलागाम्बुनादिमुखवासुंदशात् ॥ ॥ अथ हृदि
दवीध्यात्वागिनिसिगुनूध्यात्वाप्रकविरुनेऊपंकात्रयध्यात्वा ॥ मा
लामानीय ॥ ॐ मालमालममममालसर्वगिकिस्वरपिपी ॥ चतुर्व
र्गस्त्रियन्यस्तुस्तुमातृसिद्धिदाहव ॥ ॥ मूल १०८ ॥ ऐनव ३४ ॥
नाट १० ॥ सिद्धिस्तु १० ॥ उग्रचतु १० ॥ ॥ मालाहृदिगिनिसि

धानयस्तु ॥ ॐ त्वं मालसर्वदवानां गुरुदात्रीगिदाहव ॥ गिवं क
नूषमरुदय ॥ गवीर्यविमस्तदा ॥ ॥ मालागुरुस्तुनिवाय ॥
ऊपस्तुमर्षिणी ॥ ॐ गुक्कामिगुक्कामि ॥ ॐ नूदअपमृहगहाहा
॥ ॥ नगाअथगकिहागु ॥ ॐ कोमार्चनमः ॥ ॐ अखलुमगुलाकु
लेयापंयनचनावन ॥ नत्यदंदनिगंयनतस्मै श्रीगुनूवनमः ॥ ॐ

हंसापूर्वाभिका नञ्जलमनलिका ननायी रुवानी उरूडिका रवा
नवनवधियासि। द्वेलम्भीयनाथीः॥ रासानारवाय नारवायि शुवन
जननी नाजनाजन्धनी सात्वाभकाने कनूयां सकलसूजननी नोमिद
वीरूमायी॥ कालावृहाश्रवदंजलविदिगिगनं दानयूकं वदुषं
उदहंष्ट्रक कष्टकजगज्जदलमनाग्निगत्कमनं व॥ नगान्नगुश्र

सुरगतद्वयविलिखिका नूटमाना नूगहा कोमानी वालनूयी यनम
यनसदायाशुवामंगलारवा॥ वक्रकदायं दूरुगमप्रहल्लमल
वान्दिग॥ सर्गपालिगसंहानका विल्यहिगमाविनि॥ वक्रक
हृष्टिहासरथं त्वं मनादहवत्यपि॥ विष्णुवयत्वमवादास्तथापा
सुतगाकिता॥ महान्द्राश्रमं हानकलित्वमददः निव॥ दवत्यश्रुवि

देहानां नाना यद्द क ता मयि ॥ अग्न्या मित्रा सीता निषिता की वा
हिना मयि ॥ निवद या मि कि न हं सर्व क लोक सा कि ॥ १७ ॥ न कुल मं
ना अना हं न ग्रीवा ना ग्ध मवव ॥ त्वया दान्द या र्क किं या च हं चतु ना
वना न ॥ नमस्तु ह ग वल्य म्बान मस्तु ह कि वत्स न ॥ नमस्तु जगदा धा
नत्र पिनि या हि मां ह दा ॥ मा न न वा मि नू य न न ग्री वं न वा गु लं ॥ १८

क्वा द स्थित या यू जां त व जा ना म्य न्य धीः ॥ त्वं मा मा त्वं पिता वं ध त्व
मव जग दी ध्वनी ॥ त्वं गतिः न न लं च व त्व र्गं त्वं मा न्क मवव ॥ वि
हा य त्वां जग न्मा त न्ना न्मां जा ना मि द व तां ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु
मस्तु नमस्तु नमः ॥ त्वं शा स्ता त्वं य ना म्वा त्वं नृ त निव यं त्वं म हा मू द
नी त्वं काली त्वं हे न वी त्वं त्वं म सि य न म क ना त्वं गु ण त्वं त्वं

पा ॥ त्वं रगे नी त्वं नि वा त्वं न द भू त वि वि वि ध का न जा न त्व म का ॥
बु धी मा ह त्व नी च व को वा नी वे धू वी ग थ ॥ वा ना ही च व मा ह डी वा म
लु सा न मा मु त ॥ ॥ सु क ना स न मा नू रा ख प्र च म्म ध ना थ व ॥ पु न या
स्व द नं का नं रं न वा थ न मा मु त ॥ ॥ मा लु व नं म ह न्म नं थ का य क
स्व नू थि नं ॥ सु न म लू मि ना ड द रं जा मि स ग नं ध्रु वं ॥ ॥ अ प दा नं व

ता व नि थ नं नि र्वा ण दा थि नी ॥ दूः ख प्र थ ह ना नि थं सि धि लू की च मा
म हं ॥ ॥ व धु ध र मू लु दि ॥ त्वं मा ता पि न त्व म व सु द त्वं स र वा
त्वं वि धा त्व म न की र्ति व नि त त्वं ग ग्ध म थ दू गः ॥ कि रू णः सु क
लं त्व म व दि थ नं क्वा लो क्क पा का लं ग्री थ नं म ग्ध नी प्र सी द न न गं त्व
ला न्थ थ ना लि म ॥ ॥ अ प ना रं मि ॥ अ प्र गं मा दि ॥ अ स्ता न न म लू का

नः ॥ नमो जलकमनत्र कायलं ॥ ॐ नः पूर्वप्राप्तवृद्धिदह
धर्माधिकानता जायतु प्रसूयुवव्याहमनहावावाकमल्लिह
मास्यां वृद्धां मूदत्रलानिप्रायत्सु नयइकं यत्सु नंगत्सर्ववृद्धा
लमसु स्वाहा ॥ ॐ नमो मांमदीयं प्रानिवममय्यामितमः ॥ नम
नः सुगुणकऊनविहऊयित्वादवताये निवदयत्समयवृद्धमासं

न ॥ नमो नानायायनं ललीगुनपूजयित्वा सुमयवृद्धमां सः
दक्षिणामहिसंगुनपूजायगुनवनिवदययथा ॥ ॐ नमो लीयाग्रमह
न्यात्सु गृहीत्वापनमं न्वनस्वीकृत्य उरुगदहिऊयंदहिनिपूदह
॥ नमो यथायथा विधानेन स्तुवामं स्तुनाकिपूजनं ॥ नमो कल
गविमूर्तयित्वा यगमागुदय्यानिधाय दवताशशिधकं कान

ॐ चन्द्रनादिसुगुलमाहनीदवगाथददयथा ॥ ॐ चन्द्रनंलपि
नमिगि ॥ ॐ सिद्धनंसिन्नसंधरि ॥ ॐ कालीनकप्रविज्ञायमा
हनीकऊनप्रहा ॥ गृहालवीनयागस्यरुलसंप्राप्यमम ॥ ॐ द
धनकनःसमायुक्तावीनराववनप्रदः ॥ सर्वमस्तदाहत्वेगृहा
लजगदंविक् ॥ ॥ नमावीनजनस्याचन्द्रनाद्यालीवादिः ॥ ॥ कुरु

विसर्जयित्वागकिहसुदायय ॥ ॐ यागनीमि ॥ ॥ नमस्तु
यादलनं ॥ ॐ वस्तुक्रायमिगि ॥ ॥ याप्रवन्दनं ॥ श्रीमहेवदेति
॥ ॥ गतः ॥ श्रीपाशमृगनमस्तुसिद्धनमर्थला ॥ यत्रिवानअ ॥ ॐ
वैकुण्ठ ॥ श्रीमाहाकोमानीदवीसांगंसायुधमवाहनं ॥ ॐ
वस्तु ॥ नवसहिगान् श्रीपादकांगय्यामिनमः ॥ ॥ न

तायना द्युरं ददत् ॥ ॐ श्री गवगिमकोमानिदयाः प्रम
नादमखं चिह्नाह ॥ ॥ अथ वलिविसर्जनं ॥ ॥ गृह गिकावावृह
विलिख्य कथायुसर्व वलिंधाय गभयप्यालायूजनमहिषाय
यथा ॥ ॐ गदाप्रिलुप्तमनूयागहस्तु गिलावनं ॥ कक्षं हरेन
वेधाय सर्वविघ्ननिवाननं ॥ आवाहनाद ॥ अथ वलिविसर्जनं ॥ ॐ श्री

श्रीं उक्तिमरेन वप्रकहिवलिंगं ॥ ॐ श्रीं सुमुखीद
वीवलिंगं ॥ ॥ गगापुत्रं ॥ ॐ श्रीं सुमुखीद
स्तुतयं ॥ ॐ गगनार्चनविधिन गिषयित्वाद न्यवन्नम
॥ ॥ यना द्युरं ददत् ॥ ॐ गगापुत्रं ॥ ॐ श्रीं सुमुखीद
श्रीं गवगिमकोमानिदयाः यथागकि पूजितासिनमः ॥ आनिम

ॐ यादु दिमकु लाले लो न ॥ गतः संज्ञानमृदया यथा मकं गृ
त्वा यदहन्नासाय नाना कुरुलिन्यां विष्टम् ॥ श्री लाले गिका लं
लिख्य आशुपुष्पा निधाय यजयथा ॥ ॐ श्री निर्माल्य वासिन्वे
नमः ॥ ॐ श्री लाले वाय विना देगीत निवगान्नी लाशुका लाले सिनी वि
म्वा श्री नवजावका इव न लाले माफी लुकर लुकर लो ॥ दयादीनि

गगं रवकुरु लधनामालिख्य पूजा कुरु लो मागं गीध गतास्मिन्
स्मिन् मरवी न्यवीशुकः ह्यामलो ॥ ॐ श्री लाले उक्ति स्त्रवाशुलि
मागं गी सर्ववगं क निस्वाह ॥ नमो यदित्वा नमः ॥ गतः श्रीः
याशामृगनात्मनिः संज्ञा दयाशामृगं कुरुयात् ॥ ॐ हिनक्षपाय
मरधाः पूरुं देदाति मधुवास्तानि ॥ एकदा वधुन पहेन निज

यस्मिन्नाददाति ॥ ॐ रुद्रमिधनमानन्दहृन्ववुधसाधकानां मा
थानन्दिनित्वं सुधारुव ॥ ॥ यो ग्राह्यमरुवीरुहः ॥ ॐ यं यं प
न्थिगिधादनयं यं यं यं गि व रुषा ॥ सुदासतां ममायाति यदि न क
समाहवत् ॥ गदमृगस्त्रिग्वहृमो दीकनं विलिख्य न द्विजं वामक
निष्साधुयात् ॥ हस्ती पादं प्रकाश ॥ ॥ सामान्या र्थसंख्या मृग

नास्मसिंचयत् ॥ यदुत्थमिलकं वृथात् ॥ ॐ श्रीलक्ष्मीयमिदह
यनमानन्दानविन्दारुवा नामानलनिनाम निखलं महलक्ष्मी
महामङ्गला ॥ मध्याह्नकि यथाधना विदुवनालं कानसं यदि दास्य
द्वष्ट्रकलासदावुचवः श्रीकालिकाया गिनी ॥ ॥ गंगा यं पु
त्यपूषारुषला ॥ ॐ अम्बयुवगमिमिनि ॥ ॥ वनरत्नादकं धिवत् ॥

कः॥ ~~सं~~ सं २२ उग्रान्वदि ॥ नदिनं श्री पूर्ण कृष्ण जन्म ॥
 (ममाना वि पूजा ॥ सामान्यार्घ्य नमो प्राक ॥ ~~ला~~ ला धनं ॥ ॐ देवी काट
 यी लय २ ॥ मा दो ॥ ॐ उडि यान पी लय २ ॥ उ नो ॥ ॐ काम नू पी लय २ ॥
 नु य ॥ ॐ महा काम गि नि पी लय २ ॥ ना ॥ ॐ ऊ ला धन पी लय २ ॥
 मनो ॥ ॐ पू र्ण गि नि पी लय २ ॥ नि न ॥ ॥ पू नः सामान्यार्घ्य जल प्राक ॥

ॐ नमोः क्रोकोत्तमार्थनमः शंभुकिं पवित्रीकृतं २ ममगकिं
 १ नृ २ त्वाहा ॥ ॐ श्रीः ॥ दं च नमः ॥ ॐ श्रीः ॥ नमः ॥ ॐ श्रीः ॥
 वंदनः माहनी मृगुनः वस्तुलंकालः मालायुष्यधृषदीधयुगिष्ठा
 प्रयोजलि ॥ ॐ श्रीः ॥ नमः ॥ मूल ॥ ॐ श्रीः ॥ नमः ॥ ॐ श्रीः ॥
 ॐ श्रीः ॥ नमः ॥ ॐ श्रीः ॥ नमः ॥ ॐ श्रीः ॥ नमः ॥ ॐ श्रीः ॥